लम्हों की सलीब

शीन० काफ० निज़ाम



सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

शीन० काफ़० निज़ाम

वितरक सूर्य प्रकाशन मंदिर बीकानेर

प्रकाशक त्रिवेणी प्रकाशन जोधपुर

मुद्रक हिमालय प्रिंटर्स, जोधपुर

मूल्य दस रुपये मात्र

LAMHON KI SALEEB (a collection of urdu poetry)
by Sheen Kaf Nizam Price Rs 10/-

पेश लफ्ज

जनाब गीन काफ निज़ाम साहिब उर्दू के एक मशहूर म्रो मा'रूफ(ख्याति प्राप्त) शायर हैं। यू तो दौरे हाज़िर (आधुनिक युग) मे बहुत से नये शोअरा उर्दू शायरी के उफ्क (क्षितिज) से उभर रहे हैं, मगर इन सबको ज़ौके-सलीम (काव्य ममज्ञता की शुद्धता) की दौलत नही हासिल हुई है। निज़ाम साहिब का ज़ौके सुखन (काव्य रसिकता सहृदयता) पुख्ता (परिपक्व) है और इनकी शायरी म रिवायत (परम्परा) के साथ जिद्दत (नवीनता) भी पाई जाती है। यही वज्ह है कि उनके कलाम मे हमको एक खास किस्म का तवाज़ुन (सतुलन) और एतिदाल (एक रूपता) मिलता है।

निज़ाम साहिब का कलाम बलागत निज़ाम (अलकारिक शैली) उर्दू के नुमाया रसाइल म्रो जराइद (पत्र पत्रिकाओ)मे शाया (प्रकाशित) हो चुका है, मिस्लन् "तहरीक" दिल्ली, 'रूबी' दिल्ली "फारान" कराची, 'तामीरे मिल्लत' रावलपिंडी, "लाहौर" हफ्तरोज़ा (साप्ताहिक) वगर म इनका कलाम शाया हो कर कुबूले आम (जन साधारण की पसन्द) हासिल कर चुका है। "निज़ाम" साहिब क मयारी शायर होने की एक ये भी दलील है कि वो ऑल इण्डिया रेडियो दिल्ली के माहाना मुशायरो मे शिरकत कर चुके है। 'निज़ाम साहिब की शायरी की शोहरत न सिर्फ उर्दू हल्को मे शोला ए सहरा (जगल की आग की लपटो) की तरह फली हुई है, बल्कि हिन्दीदा (हिन्दी जानने वाले) लोगो म भी ज़ुहू म्रो नस्तरी (दो नक्षत्रो के नाम) की तरह चमक दमक दिखा रही है। त्रिवाणी प्रकाशन के सैक्ट्री जनाब सत्येन जोशी साहिब बहुत एहतिमाम (निगरानी) के साथ उनके कलाम की इशाअत (प्रकाशन) का इतिज़ाम फरमा रहे हैं। दरअस्ल मे जोशी साहिब की अदब नवाज़ी (साहित्य गुणग्राहिता) और फराखदिली (विशाल हृदयता) का एक सबूत है कि वो उर्दू क कलाम को मुतक्लि (परिवतत) कर रह है और इसी तरह हिन्दी-उर्दू दोना जबाना के अदब की खिदमत अजाम दे रहे हैं। निज़ाम' साहिब का कलाम हिदुस्तान की आवाज है उन्होंने हिदुस्तान के सही और मुफीद अनासिर को अपनी हस्ती मे जज्ब (आत्मसात) करने की कोशिश की है यही वज्ह है कि उनके कलाम का एक नुमाया उसुर (तत्व) यकजहती है। जिस पर हिदुस्तान की काबिले-फख्र (गव करने योग्य) और हर दिल अज़ीज (सवप्रिय) वज़ीरे आज़म (प्रधानमत्री)

इदिरा गाधी ज्यादा ज़ोर दे रही हैं। और इसी नुक्त ए नज़र (दृष्टिकोण) म हिदुस्तान के आइन्द की तरक्की का राज़ (भेद) मुज़मिर (छुपा हुआ) है। 'निज़ाम' साहिब इस राज़ से आगाह (भिन) हैं। चुनाचे वो कहते हैं –

हम म से कोई भी तहा न उठा पायेगा
जीस्त के बोझ को मिल–जुल के उठाया जाये

ज़िदगी तेरे हकाइक को समझने के लिये
फिर अधेरे मे कोई तीर चलाया जाये

'निज़ाम' साहिब ने वाज़े-तौर (स्पष्ट रुप) पर कह दिया है कि हिन्दुस्तान की जिम्मेदारियो का बोझ तहा नही उठाया जा सक्ता है वल्कि उसको उठाने के लिये सारे हिदुस्तानियो को दस्तो बाज़ू (भुजा) का ज़ोर सर्फ (व्यय) करना होगा।

निज़ाम' साहिब को इसकी भी वाकफियत (जानकारी) है कि हिदुस्तान आलाम–ो–अफकार (दुख और चिन्ता) मे गिरफ्तार है। उसके सामने बहुत से ऐसे मसाइल (समस्याए) हैं जिनका हल दरियाफ्त (मालूम) करना मुश्किल है। इसका सबब य है कि हिदुस्तान आज भी इत्तहाद–ो–इत्तफाक (सगठन और सहमति) से महरुम (वचित) है। यही वजह है कि यहा का हर बाशिदा मग्मूम ो मलूम (उदास और दुखी) नज़र आता है। निज़ाम साहिब भी इसी मुसीबत का शिकार हैं, जिनकी शब काटे से नही कटती है। चुनाचे उनका कौल है —

वो जिसके आने का मतलब है रात का जाना
उस आफ्ताब को लाओ कि शब नही कटती

अगर खुशी की किरन कोई आ न पाये इधर
तो गम को और बढाओ कि शब नही कटती

मिलेगा सुब्ह को यारो ! ह्याते–नौ का पयाम
हो सुब्ह कसे वताओ कि शब नही कटती

निज़ाम' काटते आये हो तुम पहाड से दिन
बहाना ये न बनाओ कि शब नही कटती

निज़ाम साहिब के कलाम का सब दहर अल्मिया है। यही वजह है कि उनके अशआर हमारे दिल म नाविक की तरह चुभ जाते हैं। और बकौल 'बिहारी' के वो

देखने मे छोटे लगते हैं मगर घाव गभीर करते है। उनके मुदरजाजेल (निम्नलिखित) अशआर किस कदर दिलसोज हैं—

रफू जो हो न सके आँसुओं के धागा से
असीरे-ज़ीस्त को दुनिया म वो लिबास मिला
खिजा का दौर हो या हो बहार का मौसम
'निजाम' जब भी मिला है हमे उदास मिला

'निज़ाम' साहिब की शायरी म हुस्न-ो-इश्क के जज्बात (भावना) भी पाये जाते है मगर ये जज्बात तासीर से महरूम नही हैं। इसका सबब ये है कि उनकी शायरी मे वो तल्खी-ए-गम (दुख की कटुता) शामिल है जो काम-ो-दहन की शिद्दत (अधिकता) से हमकिनार (आलिंगनबद्ध) कर देती है। उनके मदरजाजेल अशआर मुलाहिज़ा फरमाइये—

जितना समझे हो निभाना नही उतना आसा
सोच लो फिर जरा पैमाने-वफा से पहले
कश्तियाँ मौजों के थपेडे भी रहेगी सालिम
कैसे अन्दाजा हो तूफाने-बला से पहले

उनके चेहरे से देखना इक दिन
रुनुमा मेरी बेबसी होगी

निजाम साहिब के यहाँ फलसफ ए हयात (जीवन दर्शन) की भी झलक मिलती है, इसका मतलब ये है कि उन्होने हवाइके-दुनिया (सासारिक सत्य) को पुख्तगी (परिपक्वता) से समझने की कोशिश की है। और उनको एक फिलसफी (दार्शनिक) की नजर से देखा है। मिस्लन् वो कहते हैं—

किताबे जिन्दगी से दोस्तो! ये फाल निकली है
हयाते चन्द रोजा आदमी की आजमाइश है

जिस जिन्दगी पे नाज है इतना जनाब को
उस जिन्दगी का क्या है अभी है, अभी नहीं
रो-रो के मौत मागते हैं जाने किसलिय
जब ज़ीस्त का इलाज यहाँ मौत भी नही

निजाम साहिब के कलाम मे सलासत (सरलता) रनुमा, और शिगुफ्तगी पाई जाती है। इसका एक सबब ये भी है कि वो बाज औकात बहुत हसीन रदीफ इख्तियार करते है। दौर हाजिर म नय गोग्ररा रदीफ ो-काफिये की बन्दिश से कतरा रह ह मगर इस बदिश से शर म खनक पैदा होती है जो तासीर म इजाफा (बढोतरी) करती है। निजाम साहिब क मु दरजाजेल प्रशग्रार की रदीफ पर गौर फरमाइय –

सरसरे बेवफाई ने गुल कर दिया
इक चिरागे-वफा था, बहुत दिन हुए

इक मुजस्सम कयामत को क्या जाने क्यू
जिन्दगी कह गया था, बहुत दिन हुए

आरजू-ए खुशी थी, बहुत दिन हुए
मेरी दीवानगी थी, बहुत दिन हुए

बेसबब नाज करता है उन पर अदू
हम से भी दोस्ती थी बहुत दिन हुए

अस्रे-हाजिर तिरे आईन म रुसवाई का
दूसरा नाम है शोहरत, मुझे मालूम न था

म तो समझा था कई जश्न अभी बाकी हैं
उठ गई रस्मे शहादत, मुझे मालूम न था

इन मुख्तसर (सक्षिप्त) स लफ्जा म निजाम साहिब के कलाम की सारी खूबियो का जायजा लेना मुश्किल है। मगर मज्मूई तौर पर (कुल मिला कर) मैं बडे एतिमाद (विश्वास) के साथ कह सकता हूँ कि वो एक बाशऊर और जी इल्म (विवेकशील) शायर हैं। उनके कलाम म दवामी (अनश्वर) और आफाकी (सासारिक) अनासिर (तत्व) पाये जाते हैं जो उनकी हयाते अबदी (अमरत्व) के जामिन हैं। मुझे उम्मीद है कि निजाम' साहब का य मज्मूआ ए कलाम (कविता सग्रह) मुश्के-खुतन (कस्तूरी) की तरह हिन्दुस्तान की गली गली मे महकेगा।

गोरखपुर
दिनाक १३ अगस्त, १९७१

डॉ सलाम सदीलवी
उर्दू विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय,

साहित्यकार की स्वाभाविक कामना होती है कि उसकी रचनाएँ छपें, 'निजाम' इसके अपवाद हैं। भारत पाक की साहित्यिक पत्रिकाओं में व अवसर छपते रहते हैं, लेकिन "लम्हों की सलीब" को किताब की शक्ल देने के लिए उनको जिस मुश्किल से मनाया गया है उसका महज अनुमान नहीं लगाया जा सकता। कारण, व उर्दू लिपि में लिखते हैं और हम उनका कलाम देवनागरी लिपि में प्रकाशित करना चाहते थे। लिप्यान्तर करने में भी काफी कठिनाइयाँ थी। अतः इस पुस्तक में उनके साहित्य का छोटा सा हिस्सा ही सम्मिलित किया जा सका है।

वैसे, जोधपुर से कई स्वतंत्र प्रकाशन निकले हैं, परन्तु राष्ट्रीय साहित्य सृजन की प्रक्रिया में, जोधपुर का नाम अभी तक नहीं जुड़ा। इसका कारण यह नहीं कि यहाँ साहित्यिक प्रतिभाओं का अभाव है। विडम्बना यह रही है कि स्वाभिमानी साहित्यकार को प्रकाशित होने का लोभ नहीं रहता। यही कारण है कि आज जन-कवि स्व० 'उस्ताद' जैसे महान साहित्यकार से हिन्दी साहित्य जगत अपरिचित है। उनके साहित्य को भी हम शीघ्र प्रकाशित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस योजना की अगली कड़ी है, हिन्दी, उर्दू एवं राजस्थानी (तीन भाषाओं) का संयुक्त संग्रह।

आज आवश्यकता उस साहित्य के प्रकाशन की है जो युगबोध से परिपूर्ण, मानवीय संवेदनाओं से ओत प्रोत और जीवन के यथार्थ से जुड़ा हो। उक्त गुणों को ध्यान में रखते हुए 'लम्हों की सलीब" की रचनाओं का चयन किया गया है। इसी के साथ हम एक नये जगत में प्रविष्ट होने की संभावनाओं का पता लगा रहे हैं।

मैं आदरणीय डा० सलाम संदीलवी साहिब का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने पेश लफ्ज़' लिखने की कृपा की।

अंत में उन सभी मित्रों का आभार प्रदर्शित करता हूँ जिन्होंने समय समय पर मेरा उत्साह बढ़ाया, सहयोग किया एवं अपने अमूल्य सुझाव दिये। इस संदर्भ में सर्वश्री नारायणदास बोहरा (उमरावजी) जगदीश बोहरा, ए० डी० नाग, ए० डी० राही, हबीब कैफी जर्नादन विस्मा, एम० ए० गफ्फार राज बंशीधर पुरोहित एवं आवरण सज्जा के लिये बी० आर० प्रजापति 'निराश' के नाम उल्लेखनीय हैं।

जोधपुर

१५ अगस्त, १९७१

सत्येन जोशी

लम्हो की सलीब पर टगे हम लोग लम्ह ब लम्ह जिन्दगी स दूर और मौत से करीब होते जा रहे हैं। माहौल स उक्ताहट, घुटन, अहसास, तन्हाई के तार और जज्बात के जाल मे फँसी जिन्दगी की कराह और छटपटाहट का दूसरा नाम शायरी है।

जिन्दगी म कई अनचाह काम हुए। ये किताब, एक एक लम्हे मे बटी जिन्दगी के एक लम्हे की गिरफ्त श्री सत्येन जोशी की जिद्द और लगन का नतीजा है।

ये रचनायें, लम्हो के केनवास पर मुख्तलिफ कैफीय्यतो के रगा की आमेजिश से बनी तस्वीरे है।

लम्हो की सलीबो पे टगे रहते है
अहसास के मलबे मे दबे रहते हैं
इस सद जमाने मे हमारे मजमूँ
लफजा के लिहाफो मे छुपे रहते हैं

–निजाम

गजलियात

तुम्ही बताओ कि कहो दिल मिरा न क्यूं गमगी
हज़ार रंजो-मुसीबत और एक जाने-हज़ी

न जाने कितने नशेबो-फराज़[1] से गुज़री
मगर हयात है यारो! अभी वही की वही

न जाने कैसे बराबर हुई मुहब्बत में
हज़ार ख्वाहिशें मेरी तुम्हारी एक 'नही'

मैं तुझसे बस यही पूछूं कि क्यूं हुवा था खफा
रहे-हयात[2] मे मिल जाय तू मुझे जो कही

कभी तू बैठ के हर बात साफ कर वरना
मिरा गुमान[3] पहुँचने को है बहद्दे-यकी[4]

किसी मुकाम की, वादे की, क्या जरूरत है
रही हयात तो मिल जायेंगे कही न कहीं

---

(१) ऊँच नीच (२) जीवन-पथ (३) संदेह
(४) विश्वास

चिरागे-जाम जलाओ कि शब नही कटती
गजल का साज़ उठाओ कि शब नही कटती

वो ख्वाब सोये हुये है जो एक मुद्दत से
उन्ही को आज जगाओ कि शब नही कटती

अगर खुशी की किरन कोई आ न पाये इधर
तो गम को और बढाओ कि शब नही कटती

वो जिसके आने का मतलब है रात का जाना
उस आफताब[1] को लाओ कि शब नही कटती

मिलेगा सुब्ह को यारो, हयाते-नौ[2] का पयाम[3]
हो सुब्ह कैसे बताओ कि शब नही कटती

'निजाम काटते आये हो तुम पहाड से दिन
बहाना ये न बनाओ कि शब नही कटती

———

(१) सूय (२) नया जीवन (३) सदेश

दिल मे जज्बात की शिद्दत कभी ऐसी तो न थी
आपकी हमको जरुरत कभी ऐसी तो न थी

हमने वारफ्ता-मिजाजो[1] का ये एहसां मानें
आपके हुस्न की शौहरत कभी ऐसी तो न थी

अपनी गफलत ही से हालात की सूरत ये बनी
वरना हालात की सूरत कभी ऐसी तो न थी

तेरी अँगड़ाई का आलम भी है शामिल इसमे
वरना कोनैन[2] की वुसअत[3] कभी ऐसी तो न थी

किसलिए दारो-रसन[4] तक इन्हे ले आये हो
तुमको दीवानो से उल्फत कभी ऐसी तो न थी

मैं भी अब गौर करूँगा कि हुआ क्या ये निज़ाम'
मुझसे लोगो को शिकायत कभी ऐसी तो न थी

---

(१) आत्म विस्मृतों (२) दोनो ससार
(३) विस्तार (४) फासी का तख्ता और रस्सी

तेरे बगैर यूं तो मुझे कुछ कमी नहीं
ये और बात है कि मयस्सर[1] खुशी नहीं

जिस जिन्दगी पे नाज है इतना जनाब को
उस जिन्दगी का क्या है अभी है, अभी नहीं

रो-रो के मौत माँगते है जाने किसलिए
जब जीस्त[2] का इलाज यहा मौत भी नहीं

जो गिडगिडाये जा के कही अपने वास्ते
बेचारगी कुछ ऐसी भी बेचारगी नहीं

ऐ इन्कलाब फिर कोई हल्की सी छेड-छाड
अहले-ज़मी की आँख अभी तक खुली नहीं

उनका है क्या सुलूक अलग बात है 'निजाम'
लेकिन मिरे खुलूस मे कोई कमी नहीं

---

(१) प्राप्त (२) जीवन

अश्क पिन्हां[1] हँसी के पर्दे में
गम मिला है खुशी के पर्दे मे

तूने लूटा मुझे सरे-महफिल
अपनी शर्मिंदगी के पर्दे मे

हुस्न सारे जहा का देख लिया
आपकी सादगी के पर्दे म

हमने तुझको कहा नही ढूँढा
अपनी दीवानगी के पर्दे में

जाने क्या-क्या गुनाह करता है
आदमी आदमी के पर्दे मे

हाय! कैसा निजामे आलम है
तीरगी रोशनी के पर्दे मे

---

(१) छिपा हुआ

उनसे तुझको अगर मुहब्बत है
तो जताने की क्या जरूरत है

उनको भी अब मेरी जरूरत है
ये फसाना नही हकीकत है

मौत कुछ देर के लिए रुक जा
जिन्दगी को मेरी जरूरत है

ये भी है कोई पूछने की बात
आपसे क्यूँ मुझे मुहब्बत है

अपनी किस्मत से है गिला मुझको
आपसे कब मुझे शिकायत है

जीस्त मे जिक्र क्या मुसीबत का
जिन्दगी खुद ही इक मुसीबत है

माहसल[1] ये है जिन्दगी का निजाम'
जो गुजर जाय वो गनीमत है

---

(१) निष्कर्ष

चार दिन की है चाँदनी, क्या है
और तो अपनी जिन्दगी, क्या है

जैसे तैसे गुज़र ही जायेगी
जैसे तैसे गुज़र गई, क्या है

सब्र कर सब्र ऐ दिले-मुज़्तर
जो भी होनी थी हो गई, क्या है

फिलसफी दे सके न ठीक जवाब
मैंने पूछा था 'ज़िन्दगी क्या है ?'

छोडती क्यूँ नही मेरा पीछा
जिन्दगी मुझसे चाहती क्या है

ये है उनका करम जनाबे 'निजाम'
वरना औकात आपकी, क्या है

आप पहले ही क्यूँ बिगडने लगे
सुन तो लीजे कि इल्तिजा क्या है

आपकी हर सज़ा मुझे मन्जूर
ये तो फरमाइये खता क्या है

हम तुम्हारे हैं तुम हमारे हो
ऐसी बातो मे अब धरा क्या है

मैंने अक्सर उसे किया महसूस
मैं नही जानता खुदा क्या है

मागने से तो मौत बेहतर है
छीन ले इनसे मांगता क्या है

शायरी के सिवा जनाबे 'निज़ाम'
उम्र भर आपने किया क्या है

एक दुनिया मिटाये बैठे हैं
वो जो पर्दा उठाये बैठे है

क्या सिखाता है उनको तू नासेह
वो तो सीखे-सिखाये बैठे हैं

मुद्दतो वो नज़र नही आते
जो नजर मे समाये बैठे है

क्या बतायें मिजा[1] के पर्दे मे
कितने आँसू छुपाये बैठे हैं

हश्र मे प्यार से न देख मुझे
लोग दुनिया के आये बैठे है

काफिरो का खुलूस तो देखो
तुम पे ईमान लाये बैठे हैं

---

(१) पलक

ये बता क्या था जहाँ मेरी दुआ से पहले
ओम और अल्लाह के नारो की सदा से पहले

मानता हूँ कि न था 'कुन'[1] की सदा से पहले
मैं था मौजूद मगर लफ्ज कजा[2] से पहले

कैसा इंसाफ है ये एक जजीरे[3] के लिए
हो गया हश्र बपा रोजे-जजा[4] से पहले

जितना समझे हो निभाना नही उतना आसाँ
सोच लो फिर जरा पैमाने-वफा[5] से पहले

फख्र जितना भी करूँ कम है कि इन्सान हूँ मैं
वरना क्या था, में गिरफ्तारे-वफा से पहले

कश्तियाँ खा के थपेडे भी रहगी सालिम
कैसे अंदाज़ा हो तूफाने-बला से पहले

---

(१) हो जा ये शब्द ईश्वर की ज़बान से निकले थे जिनसे सृष्टि की रचना हुई (२) मौत से पहले
(३) टापू (४) प्रलय का दिन (पाकिस्तान मे आये तूफान से प्रभावित होकर) (५) प्रेम प्रतिज्ञा

रंज राहतफजा था, बहुत दिन हुए
ये भी इक फलसफा था, बहुत दिन हुए

आपसे मैं मिला था बहुत दिन हुए
वो भी इक हादसा[1] था, बहुत दिन हुए

मैं तेरा तू मिरा था, बहुत दिन हुए
ये भी इक वाकआ था, बहुत दिन हुए

हम तेरे थे, तेरे है, रहेंगे तेरे
आप ही ने कहा था, बहुत दिन हुए

शैख इश्के-बुतां[2] पर है क्यूँ ताना‌जन[3]—
काबा भी बुतकदा था, बहुत दिन हुए

आज क्या है क्यूँ अपनी जबाँ से कहें
रहनुमा[4], रहनुमा था, बहुत दिन हुए

सरसरे बेवफाई[5] ने गुल कर दिया
इक चिरागे-वफा था, बहुत दिन हुए

इक मुजस्सम कयामत को क्या जाने क्यूँ
जिन्दगी कह गया था, बहुत दिन हुए

हिन्द की सरजमी का हम्हे याद है
हर बशर देवता था, बहुत दिन हुए

(१) दुघटना (२) सुन्दर नारियां (मूर्ति) से प्रेम
(३) ताना देने वाला (४) पथ प्रदर्शक
(५) बेवफाई की आंधी

अब और जी न जलाओ, कि शब नही कटती
जहां कही भी हो आओ, कि शब नही कटती

चिरागे फिक्र जलाओ, कि शब नही कटती
हदीसे दर्द सुनाओ, कि शब नही कटती

गुजर ही जाता है दिन तो किसी तरह यारो
मैं काटूं कैसे बताओ कि शब नही कटती

सुकूते-मग[1] है छाया हुआ फिजाओ पर
नवेदे-जीस्त[2] सुनाओ कि शब नही कटती

वो इक जहान जिसे लोग दिल भी कहते है
बना बना के मिटाओ, कि शब नही कटती

दवा से कुछ भी नही हो सकेगा चारागरो!
दुआ को हाथ उठाओ, कि शब नही कटती

'निजाम रात कटी तुम हुए चिरागे-सहर
हम्हें न और बनाओ, कि शब नही कटती

---

(१) मौत सी चुप्पी (२) जीवन स देश

खत्म पर अब शबे-जुदाई है
गम के मारो! तुम्हे बधाई है

बज़्मे-रिन्दाँ[1] मे जाऊँ किस मुँह से
मुझ पे इल्जामे-पारसाई है

आँसुओ को सम्भाल कर रखिये
उम्र भर की यही कमाई है

मुझ से वो पूछते हैं, मैं उनसे
अपनी किस बात पर लडाई है ?

अब तो खुद से भी मिल नही सकता
नारसाई सी नारसाई है

तोड कर तुम कफस निकल जाओ
अब यही सूरते-रिहाई है

पूछियेगा निज़ाम' से जा कर
अपनी हालत ये क्या बनाई है

-

(१) मद्यपो की सभा

ज़ुल्म उनकी न दिल्लगी होगी
गो मिरी जान पर बनी होगी

क़द्र उसकी न जीते जी होगी
जिसकी बातो मे पुख्तगी[1] होगी

इन दिनो कम हैं उलझनें मेरी
ज़ुल्फ़ उनकी सँवर गई होगी

उनके चेहरे से देखना इक दिन
रुनुमा[2] मेरी बेवसी होगी

रो के ऐ दिल! गुबार कम कर ले
दर्दो-ग़म मे तो क्या कमी होगी

नीद घुलने लगी है आँखो मे
रात फुरकत[3] की कट गई होगी

जिस जगह हो 'निज़ाम' नग्मासरा
उस जगह बात और ही होगी

———

(१) परिपक्वता (२) प्रकट (३) वियोग

खुलूस-ओ-मेहर[1] का पैकर दिखाई देता है
वो एक शख्स जो पत्थर दिखाई देता है

वो रास्ते मे जो अक्सर दिखाई देता है
है एक फूल पे नश्तर दिखाई देता है

अगर हो जर्रे को भी कोई देखने वाला
तो वो भी मेहरे-मुनव्वर[2] दिखाई देता है

तू ही बता दे कि जाऊँ तो फिर कहा जाऊँ
खुदा के बाद तेरा घर दिखाई देता है

लहद[3] की खाक पे सोया हूँ तो तम्राज्जुब क्या
थके हुए को तो बिस्तर दिखाई देता है

दिखाई देता है तुम को तो दरिया भी कतरा
मुझे तो कतरा समनदर दिखाई देता है

समे-हयात[4] को पी कर भी मुस्कराता है
'निज़ाम' मुझ को तो शकर दिखाई देता है

---

(१) प्रेम और कृपा (२) चमकता हुआ सूर्य
(३) कब्र (४) जीवन विष

दुश्मने-जाँ है मुहब्बत मुझे मालूम न था
ये है इक तल्ख़-हकीक़त[१] मुझे मालूम न था

देना पडता है जफाओं से वफाओं का जवाब
ये है आईने-मुहब्बत[२] मुझे मालूम न था

बढते बढते तू ही आराम भी देगी इक दिन
ऐ मेरे दर्द की शिद्दत, मुझे मालूम न था

मै तो समझा था कि ये हक से मिला देती है
एक धोखा है इबादत मुझे मालूम न था

काम की कुछ भी नही, ये तो फकत नाम की है
मेरे अहसास की दौलत[३] मुझे मालूम न था

अस्रे-हाजिर[४] तिरे आईन[५] मे रुसवाई[६] का
दूसरा नाम है शोहरत मुझे मालूम न था

मैं तो समझा था कई जश्न अभी बाकी है
उठ गई रस्मे-शहादत[७] मुझे मालूम न था

———

(१) कटु-सत्य (२) प्रेम का विधान (३) संवेदना की पूँजी (४) आधुनिक काल (५) विधान
(६) बदनामी ७) बलिदान का रिवाज

कहता है अपने आप को जो पैकरे वफा[1]
लम्हो के आईने मे कभी खुद को देखता

क्या बात है क्यूँ शहर मे तेरे हर एक शख्स
फिरता है अपने आप ही से भागता हुआ

खामोश तुम थे और मेरे होंट भी थे बन्द
फिर इतनी देर कौन था जो बोलता रहा

खामोशियो के कोह[2] को काटूँ मैं किस तरह
इस बार मेरे पास नही तेश ए सदा[3]

लफजो की रहनुमाई मे मानो का काफिला
सतरो की रहगुजार पर ऐ दोस्त! लुट गया

हर शाख जख्मखुर्दा[4] है, हर फूल खूचकाँ[5]
कितना तवील देख है जख्मो का सिलसिला

अपने ही घर के पास, मैं, अपने ही शहर मे
तुम ही बताओ अपना पता किस से पूछता

---

(१) प्रेम प्रतिज्ञा की आकृति (२) चुप्पी का पहाड
(३) आवाज की कुदाल (४) जख्म खाई हुई
(५) रक्त टपकता हुआ

शाम की जब सहर हो गई
फूल की आंख तर हो गई

आ गये, आ गये, आ गये
बस इसी मे सहर हो गई

मुझको अपनी खबर ही नही
क्या उन्हे भी खबर हो गई

जिन्दगी से न कुछ हो सका
मौत तो मोतबर हो गई

रुबरु और कोई न था
आईने की नजर हो गई

ऐसी तो मेरी हालत न थी
आपको देखकर हो गई

असरे-हाजिर मे सबके लिए
जिन्दगी दर्दे-सर हो गई

आपने जब से फेरी नजर
जिन्दगी मेरे सर हो गई

जिन्दगी आप की तो 'निज़ाम'
अब चिरागे-सहर[1] हो गई

---

(१) सुबह का दीपक

तुम्हारे हुस्न की जल्वागरी[1] की आज़माइश है
हमारे इश्क की दीदावरी[2] की आज़माइश है

वो दुनिया थी मिरे सरकार ये मैदाने-महशर[3] है
हमारी हो चुकी अब आप ही की आज़माइश है

मज़ा तो जब है कि सज्दे मे ही अब दम निकल जाये
वो कहते हैं तुम्हारी बन्दगी की आज़माइश है

किताबे-ज़िन्दगी से दोस्तो ये फाल[4] निकली है
हयाते-चन्द-रोज़ा आदमी की आज़माइश है

खुलूसे-बातिनी[5] को पूछता है कौन दुनिया मे
जहाँ मे तो खुलूसे-ज़ाहिरी[6] की आज़माइश है

अगर मर भी गया तो दर्दो-ग़म से छूट जाऊँगा
मिरा क्या है तेरी चारागरी की आज़माइश है

ये दुनिया है यहाँ तो आजमाइश होती रहती है
किसी की आजमाइश थी किसी की आजमाइश है

---

(१) बनाव सिंगार (२) परख (३) महाप्रलय का मैदान (४) शगुन (५) आन्तरिक सत्यता (६) दिखावा

भागूँगा कहाँ तक मैं, पीछे मेरे दुनिया है
यूसुफ का गिरेबाँ है और दस्ते जुलेखा है

साकी है न मयकश हैं, शीशा है न सहबा है
मयखाना-ए-हस्ती[1] का हर जाम शिकस्ता है

पैकर है मुरादो का, हर गम का मुदावा है
शमशादकदा है वो इक चाँद सा चेहरा है

तारो के चमकने से गुँचो के चटकने तक
ऐ यार सितमपेशा तुझको ही पुकारा है

इस हाल मे भी मुझको जीना है तो जी लूँगा
तेरी है यही ख्वाहिश तो ये भी गवारा है

मालूम हुआ है ये इक उम्र गुजरने पर
मरने की तमन्ना म कुछ और अभी जीना है

अहवाल गमे-दिल का इतना ही समझ लीजे
साँसो के समन्दर म शोलो का जजीरा[2] है

अहसास की आखो से कोई उन्हे देखे तो
हर तारे-गिरेबाँ में फैला हुआ सहरा है

साये मे 'निजाम' इनके आराम से मत बैठो
दीवारें है यादो की गिर जायेंगी, खतरा है

---

(१) जीवन का मदिरालय (२) टापू

आंखें बुझी बुझी है तो चेहरे लुटे लुटे
लगता है ज़िन्दगी मे कई घाव[1] जुड गये

शिकवा फजूल है ये हिसारे-हयात[2] है
कुछ बोझ तो नही है कि कोई उतार दे

घर से चला तो दश्ते-हकायक[3] की धूप मे
मेरे तसव्वुरात के चेहरे झुलस गये

जो थे वफानवाज़, वफा खू, वफा परस्त
क्या जानिये वो कौनसी बस्ती के हो लिये

जब खुश्क मालूमात[4] भी इसका नही इलाज
फिर तिश्नगी-ए-इल्म[5] को कैसे बुझाइये

पेशानी ए-उम्मीद[6] हुई है लहु-लहान
लिल्लाह[7] और सगे-हिकारत[8] न मारिये

निकलगे तुझको ढूंढने, ऐ मजिले-मुराद!
इक बार और मेरी उम्मीदो के काफिले

---

(१) पृष्ठ (२) जीवन का परकोटा (३) वास्तविकता का जगल (४) शुष्क जानकारी (५) ज्ञान की प्यास (६) आशा का ललाट (७) खुदा के लिये (८) घृणा के पत्थर

खुदाशनास[1] मिला और न खुदशनास[2] मिला
हम्हे जहाँ मे मिला जो भी बदहवास मिला

फरेबे अहदे-वफा[3] हो कि गमजदा खुशियाँ
तुम्हारे दर से मिला जो भी बेकयास मिला

रफू जो हो न सके आँसुओ के धागो से
असीरे-ज़ीस्त[4] को दुनिया मे वो लिबास मिला

गिज़ा-ए-दद पकी जिसकी आतिशे-गम मे
शऊरे शे'रो-अदब[5] तो उसी के पास मिला

हयात! तेरा ये शिकवा दुरुस्त है कि तुझे
अजल से कोई न अब तक अदाशनास मिला

हर एक लफ्ज के मा'नी से हैं सभी वाकिफ
तुम्हारी बज्म मे कोई न फनशनास[6] मिला

खिज़ाँ का दौर हो या हो बहार का मौसम
निजाम' जब भी मिला है हम्हे उदास मिला

---

(१) ईश्वर को पहचानने वाला (२) स्वय को पहचानने वाला (३) प्रेम निभाने की प्रतिज्ञा का धोखा (४) जीवन बन्दी (५) साहित्य परखने का ज्ञान (६) कला-पारखी

अब तो किसी को इसकी जरूरत नही रही
मतरुक[१] हो चुका है यहा लफ्ज ज़िन्दगी'

अब याद भी नही है कि देखा था ख्वाब क्या
उसके ख्याल से मगर आती है झुरझुरी

ऐ ज़ौके इकसार[२]! कोई और मश्गला[३]
कहने लगे है लोग शराफत को बुज़दिली

मेरे लिए जो कुछ भी तू कहता है ठीक है
अपना भी तजज़िया[४] तो किया कर कभी-कभी

मानें मिरी तो जिस्म को प्यासा ही छोड दें
उतनी बढेगी जितनी बुझाओगे तिश्नगी

फिर कोई घर जलेगा बुझा दो हर इक चिराग
मुझको जरा भी अच्छी नही लगती रोशनी

तूफाने-दर्दो-गम से न गुल हो सकी मगर
शम ए-हयात[५] साँस के झोके से बुझ गई

---

(१) वह शब्द जो अब प्रयोग मे नही आता
(२) नम्रता की रुचि (३) काम (४) विश्लेषण
(५) जीवन-दीप

चल के उस कूचे मे फिर शोर मचाया जाये
शजरे-दर्द[1] को परवान चढाया जाये

अब तो तन्हाई के दामन में समाती ही नही
दौलते-वक्त को कैफ़े मे गँवाया जाये

हम मे से कोई भी तन्हा न उठा पायेगा
जीस्त के बोझ को मिलजुल के उठाया जाये

जिन्दगी तेरे हकायक को समझने के लिए
फिर अँधेरे मे कोई तीर चलाया जाये

अक्ल के तेश-ए-नाखून से दुनिया वालो!
अहदे-माजी का हर इक नक्श मिटाया जाये

आगही[2] कहती है ज़ख्मो की हरी खेती को
दर्द की धूप मे ही अब के सुखाया जाये

दिले-'सुकरात' अभी सेर[3] कहाँ है यारो
जहर का जाम हमें और पिलाया जाये

---

(१) दर्द का पेड़ (२) बुद्धि (३) तृप्त

ग्रौर किसी की चाह के जगल म खुद को भटकाये कौन
जिसके मन को तू भा जाये, फिर उसके मन भाये कौन

बीती यादे जान की दुश्मन, रोये कौन रुलाये कौन
जिन बातो से जी जलता हो, वो बाते दोहराये कौन

वो भी मुझसे रुठे-रुठे, मैं भी उनसे कुछ नाराज
ऐसे नाजुक मोड पे यारो' माने कौन मनाये कौन

फर्जाना को भी दुनिया मे जब समझाना मुश्किल है
दीवाने तो दीवाने है, उनको फिर समझाये कौन

माँ की गोद ही ने जब मुझको बचपन मे दुत्कार दिया
फिर मुझको दे कौन दिलासा, मेरा सर सहलाये कौन

विष कन्या की बात सभी के मन म शायद बैठ गई
बहुत है चिकने चिकने चेहरे लेकिन ग्रब ललचाये कौन

मुम्किन है कि हल हो जाये ये जीने मरने की बात
लेकिन जो हर दिल मे पडी है वो गुत्थी सुलझाये कौन

क्या जिन्दगी ये इम्तिहाँ सब्र आजमा नही
अब तक समझ न पाये कि तू क्या है, क्या नही

ऐ दोस्त! तू भी मुझसे बदलने लगा है क्या
पिछले दिनो से मुझको गरूरे वफा नही

उस दिल की बदनसीबी का आलम न पूछिये
जो दिल दयारे दोस्त[1] मे आकर दुखा नही

जिसको हयात[2] कहते है दुनिया मे दोस्तो!
वो एक मोजिजा[3] है कोई हादिसा[4] नही

सब आ के डूबते है किनारो के आस - पास
तूफा मे कोई डूबा हो हमने सुना नही

कर तो रहे है इन्कलाब, इन्कलाब लोग
क्या होगा उसके बाद कोई सोचता नही

अज्मत[5] जमाना जानेगा कैसे तेरी 'निजाम'
तू दुश्मनो के हाथ से मारा हुआ नही

———

(१) प्रेमिका का ससार (२) जीवन (३) चमत्कार
(४) दुघटना (५) श्रेष्ठता

जहा कल था वही फिर आ गया हूँ
मगर सदियो तलक चलता रहा हूँ

मिरा घर इल्म का मरकज[1] था लेकिन
जहालत[2] के अँधेरे मे पला हूँ

जहाँ वालो! मुझे यूँ मत मिटाओ
किसी का मैं भी हर्फे-मुद्दआ[3] हूँ

नही पहचानने का ये सबब है
तेरी आखो से खुद को देखता हूँ

मजारो की बुतो की आड ले कर
मैं अपने आपको पूजा किया हूँ

जरा इन्साफ कर इस दौर मे भी
ये क्या कम है कि तुझको मानता हूँ

तेरा रुतबा नही तेरे ही दम से
तेरे जल्वो म, मैं भी रूनुमा हूँ

नगर ने कर दिया मसमूम[4] मुझको
वगरना मैं तो जगल की हवा हूँ

लबो-लहजा तुम्हारा अजनबी है
मगर तुमको तो मैं पहचानता हूँ

---

(१) केन्द्र (२) अज्ञानता (३) मतलब की बात
(४) विषैला

तज कर जहाँ को ज़ात के जगत मे खो गये
हमने सुना है दोस्तो! ऐसे भी लोग थे

बरसो रहे पडोस मे हम अजनबी बने
लेकिन मिले जो आज तो कितने करीब थे

ये कह के उसने फाड दिये मेरे सब खतूत[1]
उतरे हुए लिबास नही मेरे काम के

हम लोग छोड पाये न जीने का कारोबार
झपकी सी आ गई थी सो कुछ देर सो लिये

ये कह के उसने टाल दिया मेरा हर सवाल
जुडता नही है शाख से जो फूल गिर पडे

जो कुछ कहा उन्होने वही ठीक तो नही
गिनवा रहा है नाम क्यूँ मुझको बडे-बडे

मुझसे न ऐसे प्यार ो मुहब्बत से मिल 'निजाम'
डर है मैं गिर न जाऊँ खुद अपनी निगाह से

---

(१) पत्र का बहुवचन

यहाँ मालूम होती है, वहा मालूम होती है
हकीकत दोस्तो! लेकिन कहाँ मालूम होती है

खुदा जाने वो मेरा हाले दिल समझेंगे किस तरह
हकीकत भी उन्हें तो दास्ता मालूम होती है

कहीं ये खिरमने-हस्ती[1] न मेरा फूँक दे यारो
मुझे हर साँस अब आतिश-फिशा[2] मालूम होती है

जिसे कल तक मैं अपनी दोस्तो मंजिल समझता था
वही अब तो गुबारे-कारवा मालूम होती है

मुझे ऐ जिन्दगी! तू कौन सी मंजिल में ले आई
कि अब हर शरस की सुहबत गिराँ[3] मालूम होती है

ये कैसा नज्मे-आलम[4] है ये कैसा दौर है यारो!
हयाते चन्द-रोजा[5] भी गिरा मालूम होती है



(१) जीवन रूपी खलिहान (२) अग्निवमक (३) बोझ
(४) दुनिया की व्यवस्था (५) चार दिन की जिंदगी

आरज़ू-ए-खुशी[1] थी बहुत दिन हुए
मेरी दीवानगी थी बहुत दिन हुए

जिन्दगी शायरी थी, बहुत दिन हुए
शायरी जिन्दगी थी, बहुत दिन हुए

आपकी आरज़ू, आपकी जुस्तजू[2]
हासिले-जिन्दगी थी, बहुत दिन हुए

शै'ख कहता है उसको ही खुल्दे-बरीं[3]
वो जो मेरी गली थी, बहुत दिन हुए

नाम अहले-खिरद[4] ने दिया बन्दगी
वरना बेचारगी थी, बहुत दिन हुए

बेसबब नाज करता है उन पे अदू[5]
हमसे भी दोस्ती थी बहुत दिन हुए

---

(१) प्रसन्नता की इच्छा (२) तलाश (३) सबसे ऊँचा स्वर्ग (४) बुद्धिवालों ने (५) दुश्मन

अहले-शऊर[१] कहते है जिस शय को बेवसी
उसको जबाने-दह र[२] मे कहते हैं 'जिन्दगी'

जाहिर[३] मे दोस्ती है, तो बातिन[४] मे दुश्मनी
दुनिया इसी का नाम है तो समझो देख ली

होटो पे खामोशी है तो आखें बुझी-बुझी
दीवानगाने-इश्क की सूरत है दीदनी

ये मोड कौनसा है कोई तो जवाब दो
यूँ लग रहा है जिन्दगी जैसे ठहर गई

आलामे-रोजगार[५] की बातें न पूछिये
कुछ दिल ही जानता है कि कैसे बसर हुई

रख कर जुबाँ पे कहते है 'कितना लजीज है'**
अच्छे मिले है इत्र के हमको भी पारखी

---

(१) बुद्धिवाले (२) दुनिया की भाषा मे (३) प्रकट
(४) अन्तस्थल (५) दुनियावी दुख

**करी फूलैल को आचमनु मीठो कहत सराही
रे गधी मती अध तू इत्र दिखावत काही – बिहारी'

ये चाद नही कासा-ए दरियूज़ागरी[1] है
फैला के जिसे रात सहर माँग रही है

तारे हैं वही, चाद वही, रात वही है
बस तेरी कमी, तेरी कमी, तेरी कमी है

सागर कोई खनका, न कोई शम्म्रा जली है
मयख्वारो की शब कौन कहे कैसे कटी है

कह कह के यही हमने हर इक शब की सहर की
सो लेंगे जी, सो लेंगे बहुत रात पडी है

इन्कार मे इकरार है, इकरार मे इन्कार
गो बात बदल दी है मगर बात वही है

ये बात अलग है न यकी राम को आये
सीता तो हर इक दौर म शोलो पे चली है

अब दार पे ले जाग्रो कि सूली पे चढा दो
हक कहना खता है तो खता हमसे हुई है

---

(१) भिक्षा पात्र

सदफरेजें

माजी[1] की हर इक चोट उभर आई है
ये दर्द मिरी जाँ का तमन्नाई[2] है
आ जाओ, किसी तरह कि ताहद्दे-नजर[3]
तन्हाई है, तन्हाई है, तन्हाई है

※ ※ ※

शे'रो को जमाने की नजाकत बख्शी
कतरे को कुल्जुम[4] की वुसअत[5] बख्शी
खुद को तिल-तिल जला कर मैने
अफकार[6] की आंखो को बसीरत[7] बख्शी

※ ※ ※

तकदीर को बन-बन के बिगडना होगा
सुनते है कि गिर गिर के सम्भलना होगा
इतनी तो खबर है कि तडपना है हमे
मालूम नही कितना तडपना होगा

※ ※ ※

ख्वाहिशे गुमनाम[8] ने मारा मुझको
हसरते-नाकाम[9] ने मारा मुझको
जिस काम के आगाज[10] ने तुझको मारा
उस काम के अन्जाम[11] ने मारा मुझको

---

(१) भूतकाल (२) लालसी (३) जहाँ तक दिखाई दे
(४) समुद्र (५) विस्तार (६) फिक्र का बहु
(७) प्रतिभा (८) वो इच्छा जिसका कोई नाम न हो
(९) असफल अभिलाषा (१०) प्रारम्भ
(११) आखिर, नतीजे

वो कौन है, कैसा है, कुछ तो कहो
वेकार यूँ हर रोज आँसू न पियो
रात के सन्नाटे मे तुम किसको 'निजाम'
आवाज पर आवाज दिये जाते हो

※ ※ ※

गुजरे है जो मुझ पर वो बताऊँ कैसे
अफसान-ए-गम[1] सबको सुनाऊँ कैसे
वेशक हूँ, अहवाव[2] के नर्गे[3] मे, मगर
तन्हाई[4] का अहसास मिटाऊँ कैसे

※ ※ ※

बुझते हुए शोलो को हवा दो लोगो
जिन्दा हो अभी इसका पता दो लोगो
वढने लगा आसेब - जदा[6] सन्नाटा
कोई तो अनलहक[7] की सदा दो लोगो

※ ※

रवाव के पैकर[8] मे वने रहते है
खुद से भी कटे-कटे मे रहते है
शोहरत के गुबार में अटे कुछ लोग
तन्हाई की चौखट पे खडे रहते हैं

---

(१) दुख की कहानी (२) दोस्तो (३) भीड
(४) अकेलेपन (५) संवदना (६) प्रेत बाधा ग्रस्त
(७) अहं ब्रह्मास्मि (ये शब्द मंसूर ने कहे थे) (८) प्रतिमा

कुरआन ज़माने को सुनाया किसने
हर दिल पे तेरा नक्श जमाया किसने
तूने ही मुझे अब्द[१] बनाया बेशक
लेकिन तुझे माबूद[२] बनाया किसने

* * *

विज्दान[३] को विज्दान बनाओ पहले
इरफान[४] को इरफान बनाओ पहले
इन्सान को भगवान बनाने वालो!
इन्सान को इन्सान बनाओ पहले

* * *

वो सोज़ वो जज्बात कहाँ से लाऊँ
गुमगश्ता करामात कहा से लाऊँ
ऐ शाम के बढते हुए तीरा सायो!
गुजरे हुए लम्हात कहा से लाऊँ

* * *

चढते हुए तूफाँ का है पानी दुनिया
इन्सान की है दुश्मने-जानी दुनिया
दुनिया ही को फानी[५] कहने वालो
तुम लोग हो फानी,नही फानी दुनिया

---

(१) छोटा (२) ईश्वर (३) सहृदयता (४) विवेक
(५) नश्वर

आबाद था बरबाद किया है किसने
दिल शाद था, नाशाद किया है किसने
बहने लगे बैठे - बिठाये आँसू
क्या जाने मुझे याद किया है किसने

※ ※ ※

यूँ चुप-चाप से क्यूँ हो? कुछ तो कहो
बाद मिरे कैसे मिला सुकूँ[1] तुमको
रह गये पलकों पे लरज कर आँसू
उसने जब पूछा 'निज़ाम कैसे हो'

※ ※ ※

मुब्हम[2] से कुछ नामो निशाँ मिलते हैं
गुजरे हुए लोगों के कहा मिलते हैं
मोमिन का तो अब जिक्र ही छोड़ो यारो
काफिर भी यहां आज कहा मिलते हैं

※ ※ ※

इस उम्र मे मुझको ये बसीरत[3] क्यूँ दी
फिर साफ कह देने की आदत क्यूँ दी
ऐसे माहौल मे पैदा करना था अगर
यारब मुझे अहसास[4] की दौलत क्यूँ दी

---

(१) शान्ति (२) अस्पष्ट (३) प्रतिभा, बुद्धिम
(४) संवेदना

पर्दा तो कभी रुख से हटाया होता
जल्वा तो कभी अपना दिखाया होता
हमसे छुपने का कुछ भी हो सबब
खुद से तो खुद को न छुपाया होता

※ ※ ※

खुद को अजमते-इश्क[1] से आगाह करो
आकिल[2] हो तो अक्ल को गुमराह करो
तौबा की सदा देता है दिल जब-जब
कानो म कोई कहता है 'गुनाह करो'

※ ※ ※

देते है जरदारो[3] को ही पनाह
ये रसूमो आदाब[4] माशाअल्लाह[5]
दुनिया! तेरी बज्म[6] म मुफलिस[7] के लिए
मरना भी खता है जीना भी गुनाह

※ ※ ※

चिरागे-अक्ल[8] बेनूर[9] हुआ जाता है
नश्शा-ए-अजदी[10] काफूर हुआ जाता है
जितना आता हूं मैं तेरे करीब
तू उतना ही दूर हुआ जाता है

———

(१) प्रेम की महानता (२) बुद्धिमान (३) धनवाना
(४) रिवाज और संस्कृति (५) वाह-वाह (६) सभा
(७) गरीब (८) अक्ल का दिया (९) बुझा
(१०) सावकालिक

ऐवान[1] तसव्वुर[2] का महक जाता है
जज़्बात[3] का हर गुंचा[4] चटक जाता है
ऐ रूहे गज़ल[5] तुझ पे नज़र पडते ही
शोला सा रगे-जाँ[6] मे लपक जाता है

  

जमुना के किनारे वृषभानु दुलारी
आई है लेकर मन भारी-भारी
और कृष्ण के सीने से लग कर बोली
मान भी जाओ, तुम जीते, मैं हारी

  

उठने नही देते, पूर्व जन्म के पाप
या फिर इस जन्म के संताप का अभिशाप
सोते मे सुनती है यशोधरा, लेकिन
युवराज सिद्धार्थ की जाती पदचाप

  

हरजाई है वो, जो तेरा भाई है
कल रात मुझे नींद नही आई है
आग कम-कम है, दर्द भी धीमे धीमे
ये पीड सखी बहुत ही सुखदाई है

---

(१) महल (२) कल्पना (३) भावनाओं (४) कली
(५) गजल की आत्मा अर्थात् प्रेयसी
(६) सबसे बड़ी खून की नाडी

हर ज़र्राए-नाचीज़[1] से कमतर समझा
समझा तो खुदरौ ओ-खुदसर[2] समझा
अल्लाह तेरी दुनिया ने अक्सर मुझको
जाहिले-मुतलक[3] के बराबर समझा

  

राज़ कोई अपना बताता है कहाँ
हाल कोई अपना सुनाता है कहाँ
आते-जाते इन्सान से पूछे कोई
आता है कहाँ से, जाता है कहा ?

  

मज़ारों पे मिन्नतें मनाते रहना
सोये हुये मुर्दों को जगाते रहना
दुनिया कहीं भी जाये, मगर तुम तो
पत्थरों को अश्लोक सुनाते रहना

  

उन रम्ज़ो-कनायात[4] की बात छोडो
गुमगश्ता करामात[5] की बातें छोडो
तुम आज हो क्या यही देखो समझो
गुज़रे हुए लम्हात[6] की बातें छोडो

---

(१) बहुत ही छोटा और सूक्ष्म कण (२) अहंकारी और विद्रोही (३) निपट मूर्ख (४) ईशारों
(५) खोया हुआ चमत्कार (६) क्षणों

घर बार को शमशान बना सकते है
इसान को हैवान बना सकते है
आ जाये अपनी पे तो दुनिया वाले
पत्थर को भी भगवान बना सकते है

  

सुकरात को जेह्‌राब पिलाने वालो
मसूर को सूली पे चढाने वालो
किस मुँह से लेते हो इसाफ का नाम
गाँधी को गोली से उडाने वालो

  

सीने से रिवाजो को लगाये रखना
और शै'ख को पडित से लडाये रखना
इकलाब आयेगा करने सौदा
मजह्‌ब की दुकानो को सजाये रखना

  

किरदार[1] से तौकीर[2] बना करती है
हल्को[3] ही मे जजीर बना करती है
हर घडी तकदीर को रोने वालो
तदबीर से तकदीर बना करती है

---

(१) चरित्र (२) इज्जत (३) कडियो

किलश्रात

दोस्तो[1] उम्र की है नीमशबी[1]
दूर हमसे अभी सवेरा है
हाथ में शम्म-ए-जाम ले के चलो
जीस्त की राह मे अँधेरा है

— — —

एवजे दश्त[2] गुलस्ताँ होता
और का और ये जहा होता
हम न होते तो ऐ गमे-गेती[3]!
तेरा नामो-निशाँ कहाँ होता

— — —

तुझको शायद खबर नही इसकी
हाल जो इन दिनो हमारा है
जीस्त की आरजू के पर्दे मे
मौत हमने तुझे पुकारा है

— — —

यूँ तो है इक जमाना साथ मेरे
और हजारो की मैं तमन्ना हूँ
जाने क्यूँ फिर भी मुझको लगता है
मैं यहाँ आज भी अकेला हूँ

---

(१) अर्द्ध रात्रि (२) जगल की जगह (३) दुनिया के दुख

तुमको और मुझसे प्यार क्या मानी
अर्ज[1] तो आस्माँ नही होती
मस्जिदो मे बजे है कब नाकूस[2]
मंदिरो मे अजाँ नही होती

— — —

दे के ये दर्दे इंतिजार मुझे
किस खता की बता सजा दी है
बैठे बैठे यूँ चौक जाता हूँ
जैसे तूने मुझे सदा दी है

— — —

हर खुशी रास आ गई होगी
वो कोई और जिन्दगी होगी
इश्क की उलझनो मुझे छोडो
मुंतजिर[3] घर पे मुफलिसी होगी

— — —

दीनो-दुनिया की शान हैं हम लोग
इब्ने आदम की आन है हम लोग
मंदिरो मे हुई गजर हमसे
मस्जिदो की अजान हैं हम लोग

(१) धरती (२) शख (३) प्रतीक्षा मे

एक पुतला है ये रजालत[१] का
और है बीज हर मुसीबत का
आदमी जिसको आप कहते है
वो जनाज़ा ह आदमीयत का

— — —

ज़िन्दगी तेरे गेसू-ए-बरहम[२]
कौन सुलझाये इस ज़माने मे
तू तो इक तल्खतर हकीकत[३] है
और हम महव है फसाने मे

— — —

अस्रे-हाज़िर की बात मत पूछो
इसकी हर बात है कयामत - खेज
दौरे-जम्हूर मे भी लगता है
गोया कायम है सितवते-चगेज

— — —

तेरी हर आन बान हैं हम लोग
तेरी महफिल की जान है हम लोग
हमसे ऐसा सलूक ? ऐ दुनिया!
तेरे घर मेहमान है हम लोग

———

(१) नीचता (२) बिखरे हुए केश (३) अत्यत कड़ुवा-सत्य

मुल्क आज़ाद हो गया लेकिन
है इधर शब उधर सवेरा है
जगमगा उठे कुमकुमा से महल
झोपडो मे मगर अँधेरा है

— — —

भूक से खूब तिलमिलाये हैं
जख्म खाये हैं मुस्कराये हैं
इस दिवाली पे हमने तो यारो
आँसुओ के दिये जलाये हैं

— — —

वक्त के तेज़ो-तुन्द धारो में
एक टूटा हुआ सफीना हूँ
मेरी कीमत जहाँ मे क्या होगी
मैं तो मजदूर का पसीना हूँ

— — —

शै'ख ने तो ये कह दिया मुझको
अपना-अपना नसीब होता है
तू ही यारब मुझे बता दे जरा
आदमी क्यूँ गरीब होता है

ख्वाबे-परीशाँ

(नज़्में)



तब्दीली

सुनते हैं
कि अगले जमाने के
जज
सजा ए-मौत देने के बाद
तोड़ दिया करते थे
अपना क़लम
मगर
अस्रे-हाजिर[1] का
वो मुन्सिफे आजम[2]
अपना कलम तोड़ दिया करता है
जिन्दगी देने के बाद

चाँद-सा प्यार

जाने कितने लम्हे[1] बीते
जाने कितने साल हुये हैं
तुमसे बिछड़े

जाने कितने
समझौतों के दाग लगे हैं
रूह पे मेरी

जाने क्या-क्या सोचा मैंने
खोया मैंने
पाया मैंने
जख्मों के जंगल पर लेकिन
आज भी वो ही हरयाली है

ठीक कहा था तुमने
उस दिन
प्यार चाद-सा ही होता
और नही बढ पाता है
तो
धीरे-धीरे
खुद ही घटने लग जाता है

---

(१) क्षण

खोई हुई पहचान

अनगिनत मजिलो के सफर की थकान
उस पर
सहरा-ए जि़दगी[1] की हवा के थपेडो से
मस्ख[2] हुआ चेहरा
लम्हा-ब लम्हा
जिस पर
चढता हुआ
उम्र का गुबार
एक ऐसी तह म तब्दील[3] हो गया है
जिसे
आँखो की नद्दी के पानी से
धोना चाहूँ तो धो नही सकता
यादो के तेजतर नाखूनो से
खरोचना चाहूँ तो खरोच नही सकता
यानी,हर मुम्किन कोशिश के वावजूद
खुद को पहचानना चाहूँ
तो
पहचान नही सकता

---

(१) जीवन के जगल (२) विकृत (३) परिवर्त्तन

गर्दिशें

बाप की मरजी से
माँ की मामता तक
माँ की मामता से
बीवी की मुहब्बत तक
बीवी की मुहब्बत से
बच्चों के तकाज़ों तक
फैली हुई जिन्दगी की जमीन
मतलब के महवर[1] पर टिकी हुई है
और
मैं।
एक तालाब हूँ
जिस में
जिसका
जब जी चाहे
फेंक दे पत्थर

---

(१) धुरी

एक खत का जवाब

बुझ चुकी है
ख्वाहिशों की वो शम्मे
मुनव्वर[१] जिनके दम से था,
शबिस्ताने-हयात [२]
कौन कहता है ?
कि वक्त हर जख्म का मरहम है
वक्त।
सीन ए-दहर[३] पर
खुद ही जख्मे कारी [४] है
" जख्म ही जख्म का मरहम है
ये नुक्ता [५] अक्ल के पंजे की गिरफ्त में
लाना चाहूँ तो ला नहीं सकता

सोचता हूँ,
तो महसूस ऐसा होता है
कि फटने वाली है जब-तब
मेरी रगे एहसास [६]

---

(१) प्रकाशमान (२) जीवन का शयनागह (३) दुनिया के सीने पर (४) गहराघाव (५) रहस्य(६ संवेदन की नस

ये गोरो-फिक्र[७] के नश्तर
न चीर द,
उस बादवाँ[८] को
जिसका दूसरा नाम है
हयात[९]।

तो,
तुम
दुआओं के इन नीम-सद शोलो[१०] मे
मुझे जलाओगी कब तक,
जवाब दो मुझको
जवाब दो,
कि मुझे यूँ ही चखते रहना है
जबाने एहसास[११] से
जिन्दगी के कसैलेपन को
कब तक ??

उकता गया हूँ
जज्बात के सर्द हाथो को थामे-थामे

---

(७) ध्यान और विचार (८) जहाज मे लगाया जाने वाला पर्दा जिसमे हवा भरकर जहाज चलता है (९) जीवन (१०) मद्ध ठंडे अंगारे (११) संवेदना की जिह्वा

तरस गया हूँ,
पाने को लम्स [१२] की गर्मी
फिर भी
पलको की चिलमन से झाकती आँखे
इशारा करती है मुझको
तो सोचता हूँ मैं

" ज़रूर है ये भी बदचलन कोई "
ये क्यूँ नही मानता है ज़ह्ने असीर [१३]
कि
'सेक्स' भी एक भूक है
जिसकी आग,
पेट की आग ही की तरह
जब भडकती है,
तो सोच की दूरअन्देश [१४] तबीयत का
फूँक देती है
पिघाल देती है
आहनी [१५] सलाखा को,
धूल झोक देती है

———
(१२)स्पर्श(१३)गदी मस्तिष्क(१४)दूरदर्शी(१५)लाहे की

आगही[16] की आँखो म
बगावत कर के हर दौर मे
अपना नाम बदल लेती है
ये आग
मगर,
ये जह्ने असीर

जो बद है
रिवायत[17] की उस चाल म
जिस के दरीचा की सलाखे
सुनहरी हैं
जिनकी चमक
अस्रे-हाज़िर[18] के दिलआवेज खतूत[19]
देखने नही देती
इसलिये,
तुम पेशदस्ती[20] मत करो
ये वहम है
फरेब है,
खुदफरामोशी[21] है

———————

(१६) बुद्धि (१७) परम्परा (१८) आधुनिक काल
(१६)सुन्दर रेखाएँ (२०) छेड़खानी (२१)आत्मविसर्जन

कि टीका सुहाग की निशानी है
ये नाम दे कर
उसको अज्मत[२२] कम न करो
'टीका'
रूहानी ताबिन्दगी[२३] का मजहर[२४] है
पहचानने को
किसी जानवर के बदन पर सब्तकर्दा[२५] निशान
तो नही

बार-बार
मुझे माशूक कह कर
मेरे अन्दर के मद को
डरपोक क्यूँ बनाती हो
ये दौर।
जिसमे कि आदमी की कुव्वतें
सफ[२६] हो रही हैं
सिर्फ इस बात पर
कि जिन्दा कैसे रहा जा सकता है
आज भी बाजारो मे,

———

(२२)महानता(२३)आत्मिक तेज(२४) जहाँ से प्रकट हो
(२५) अंकित किया हुआ (२६) नष्ट खर्च

सोने को पीतल से ही ताला जाता है
मख़मल को
आहनी मीटर से ही नापा जाता है
और
ज़मीन को भी
जिसे हमने सदियों तक
'माँ'
'माँ'
कह कर याद किया है
ज़ँजीर से ही नापा जाता है

* * *

मुझे कुबूल है हर शर्ते कैदो बंद
मगर
तुम्हारे
शाहे गदानुमा[२७] के पास
तुम्हारे
दिल के नगर के ख़ुशनवा फ़क़ीर के पास
गुलशुदा[२८]
ख़्वाहिशों की कंदीलों के सिवा
कुछ भी नहीं!!

---

(२७) फ़क़ीर रूपी बादशाह (२८) बुझी हुई

रेजा-रेजा जिन्दगी

ऐ मेरी फिक्र तेरे हसी ज़ाविये
क्यूं सदाओं के तूफान मे खो गये

खोफ की थी रिदा[२] जब मेरे जिस्म पर
मेरा हमराज था तेरा हर जाविया
अज़म[३] के हाथ ने जब हटाया उसे
तेरा हर नक्श जाने कहा छुप गया

आगही[४] इक कदम भी तो चल न सके
इतनी टढी हैं गुफ्तार[५] की घाटियां
फ़लसफे की फसीलें हैं टूटी हुई
राहबर बनने वाली है गुमराहिया

अपने शानो पे अब भी उठाये हुए
घूमता हूँ लिये नीमजा - हौसले
लम्ह लम्ह मेरी उम्र घटती गई
और बढते गये वक्त के फासले

कत्ल कितने हुए है सरे-रहगुज़र
आज तक हो न पाई किसी को खबर
खून ही खून था खून ही खून था
देख पाई जहाँ तक भी मेरी नज़र

---

(१) कोण (२) चादर (३) सकल्प (४) बुद्धि (५) बात

धूप मुडेर से देखती सब रही
जालिमो के बदन को जला न सकी
जिन्दगी भूल कर आज रस्मे-दुआ[1]
मौत के दर की कुडी हिलाने लगी

कत्लो-गारत यहा दीनो-ईमान है
क्या कहूँ किस सहीफे[2] का फर्मान है
आज इन्सान कोई नही है यहाँ
कोई हिन्दू है कोई मुसलमान है

पड गई ओस क्यू आरजू पे वता
शाख मेह्रो-वफा[3] को ये क्या हो गया
आज सहने-वतन[4] मे ही घुटता है दम
इसकी आबो-हवा को ये क्या हो गया

रात दिन सत्य के ख्वाब देखा किये
सत्य क्या है किसी को खबर ही नही
लफ्जो की रेजगारी पे इतरा गये
नोट मतलब का दिखता कही भी नही

---

(१) प्राथना का रिवाज (२) आकाश स उतरा हुआ धार्मिक ग्रन्थ (३) प्रेम और कृपा की डाली (४) देश के आँगन

उँगलियाँ

मुक्द्दस वेद की तखलीक से
'आयोवा' की दीवारों तक
मेरी उँगलियाँ
सरगर्म-सफर रही हैं
कागज़ के सहरा से
दीवार के सीने तक का सफर
तवील नहीं लगता
मगर
कच्ची दीवार की पुश्त से
पक्की दीवार के सीने तक का सफर
बहुत लम्बा है ।
अनगिनत सडके
अनगिनत मोड
सब का एक ही नाम
'ज़िन्दगी"
जिन्दगी,
पाँव के पैमाने से
कभी न नापा जा सकने वाला सहरा
साँसो की लू से
झुलसते बदन

बदन-कफन
जल गया
फिर वही नगापन
एक सफर का खात्मा
एक सफर का आगाज
पुराना बदन
नया कफन
पता नही
कितनी बार
कितने कफन
ओढे
जला दिये
उतार फके
मगर
उँगलिया
हर पुराने कफन के
ओढने
जला देने
उतार फैंकने से
हर नये कफन के
ओढने
जला देने

चुनवाया गया
वक्त का चलन
नही मानती
उँगलियो के पीछे काम करने वाले
ज़ह्न की जलन

मेरे कफन को
मेरी ज़ात समझ कर
दफनाने वालो को
मालूम नही है शायद
कि कब्र को
जिस्म ही से मतलब है
रूह से नही
और उँगलियाँ
रूह की महकम हुआ करती है।